पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» वैश्विक राजनीति में पर्यावरण का बढ़ता महत्व

प्रश्न 1 (आसान). 1960 के दशक से पहले वैश्विक राजनीति में मुख्य रूप से किन मुद्दों पर बात होती थी?
उत्तर – युद्ध, संधि और राज्यशक्ति।

प्रश्न 2 (आसान). पृथ्वी सम्मेलन कब और कहाँ हुआ था?
उत्तर – 1992 में ब्राज़ील के रियो डी जनेरियो में।

प्रश्न 3 (मध्यम). पर्यावरण के मुद्दे वैश्विक राजनीति का हिस्सा क्यों बन गए हैं, कोई एक कारण बताओ।
उत्तर – क्योंकि पर्यावरण की समस्याएँ किसी एक देश की सीमा तक सीमित नहीं होतीं, उनका समाधान करने के लिए सभी देशों को मिलकर काम करना पड़ता है।

प्रश्न 4 (कठिन). क्या तुम्हें लगता है कि पर्यावरण के मुद्दों पर विकसित और विकासशील देशों के विचार एक जैसे हैं? अपने उत्तर का कारण भी बताओ।
उत्तर – नहीं, अक्सर एक जैसे नहीं होते। विकसित देश ज़्यादातर ग्लोबल वॉर्मिंग और ओजोन परत के छेद पर चिंतित रहते हैं, जबकि विकासशील देश आर्थिक विकास के साथ पर्यावरण को कैसे संभालें, इस पर ज़्यादा ध्यान देते हैं क्योंकि उनके लिए विकास ज़रूरी है।

» प्रमुख पर्यावरणीय चिंताएं

प्रश्न 5 (आसान). निम्नलिखित में से कौन-सी एक प्रमुख पर्यावरणीय चिंता है?
उत्तर – वनों की कटाई

प्रश्न 6 (आसान). स्वच्छ जल का अभाव किस समस्या से जुड़ा है?
उत्तर – पानी का प्रदूषण

प्रश्न 7 (मध्यम). ओजोन परत के क्षरण से पृथ्वी पर क्या खतरा है?
उत्तर – मानव स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी तंत्र पर बड़ा खतरा।

प्रश्न 8 (कठिन). कृषि-योग्य भूमि की कमी और जैव-विविधता की हानि किस प्रकार एक-दूसरे से संबंधित हैं?
उत्तर – जैव-विविधता की हानि से मिट्टी की उर्वरता कम हो सकती है, जिससे कृषि-योग्य भूमि की उत्पादकता घटती है, और कृषि विस्तार के लिए वनों की कटाई भी जैव-विविधता को कम करती है।

» पर्यावरण के मुद्दों का राजनीतिकरण

प्रश्न 9 (आसान). ओजोन परत में छेद होने का मुद्दा किस 'अंतर्राष्ट्रीय संगठन' ने सबसे पहले उठाया?
उत्तर – संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP)

प्रश्न 10 (आसान). क्या 'ग्लोबल वार्मिंग' एक राजनीतिक मुद्दा है या सिर्फ वैज्ञानिक?
उत्तर – यह वैज्ञानिक और राजनीतिक दोनों मुद्दा है।

प्रश्न 11 (मध्यम). 'धरती के प्राकृतिक संसाधनों पर किसको कितने इस्तेमाल का हक है?' – इस सवाल को 'राजनीतिक' क्यों कहा जाता है?
उत्तर – क्योंकि इसका जवाब 'देशों की ताकत', 'उनकी आर्थिक ज़रूरतें' और 'इतिहास' तय करते हैं, जो सभी राजनीतिक पहलू हैं।

प्रश्न 12 (कठिन). विकसित और विकासशील देशों के 'पर्यावरण अजेंडे' में क्या अंतर है? इसे 'रियो सम्मेलन' के संदर्भ में समझाइए।
उत्तर – विकसित देश 'ओजोन परत में छेद' और 'वैश्विक तापवृद्धि' जैसी समस्याओं पर ज़्यादा चिंतित थे। वहीं, विकासशील देश 'आर्थिक विकास' और 'पर्यावरण प्रबंधन' के बीच संतुलन बनाने को प्राथमिकता दे रहे थे, क्योंकि उन्हें अभी भी गरीबी से बाहर निकलना था। यह अंतर 'रियो सम्मेलन' में खुलकर सामने आया।

» पृथ्वी सम्मेलन (रियो-1992) और इसके परिणाम

प्रश्न 13 (आसान). पृथ्वी सम्मेलन किस वर्ष में आयोजित किया गया था?
उत्तर – 1992

प्रश्न 14 (आसान). 'Agenda 21' का संबंध किस अवधारणा से है?
उत्तर – टिकाऊ विकास (Sustainable Development)

प्रश्न 15 (मध्यम). पृथ्वी सम्मेलन में उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों की पर्यावरण संबंधी मुख्य चिंताएँ क्या थीं?
उत्तर – उत्तरी देशों की मुख्य चिंता ओजोन परत और ग्लोबल वॉर्मिंग थी, जबकि दक्षिणी देश आर्थिक विकास के साथ पर्यावरण प्रबंधन को सुलझाने को लेकर चिंतित थे।

प्रश्न 16 (कठिन). 'टिकाऊ विकास' से आप क्या समझते हैं और इसकी ज़रूरत क्यों पड़ी?
उत्तर – टिकाऊ विकास का अर्थ है कि आर्थिक विकास ऐसा हो जिससे पर्यावरण को नुकसान न पहुँचे और भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी संसाधन बचें। इसकी ज़रूरत इसलिए पड़ी ताकि हम वर्तमान की ज़रूरतों को पूरा करते हुए भविष्य के लिए भी पृथ्वी को सुरक्षित रख सकें, क्योंकि अनियंत्रित विकास से पर्यावरण को बहुत नुकसान हो रहा था।

» विश्व की साझी संपदा: अर्थ और सुरक्षा चुनौतियाँ

प्रश्न 17 (आसान). निम्नलिखित में से कौन 'विश्व की साझी संपदा' का एक उदाहरण है: गाँव का मंदिर या बाहरी अंतरिक्ष?
उत्तर – बाहरी अंतरिक्ष

प्रश्न 18 (आसान). क्या 'विश्व की साझी संपदा' पर किसी एक देश का अधिकार होता है?
उत्तर – नहीं

प्रश्न 19 (मध्यम). 'वैश्विक संपदा' की सुरक्षा में क्या मुख्य चुनौती है?
उत्तर – अंतर्राष्ट्रीय सहयोग कायम करना और सभी देशों को एक साथ मिलकर काम करने के लिए मनाना।

प्रश्न 20 (कठिन). अंटार्कटिका क्यों 'विश्व की साझी संपदा' का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है? विस्तार से समझाइए।
उत्तर – अंटार्कटिका एक विशाल, बर्फ से ढका महाद्वीप है जहाँ किसी एक देश का संप्रभु अधिकार नहीं है। यह पृथ्वी के 90% स्थलीय हिम और 70% स्वच्छ जल का स्रोत है, और 'विश्व की जलवायु को संतुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है'। यहाँ की पारिस्थितिकी तंत्र समुद्री जीवन के लिए अत्यंत उर्वर है। इसकी सुरक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ हुई हैं जैसे अंटार्कटिका संधि (1959), जो इसे 'विश्व की साझी संपदा' बनाती है।

» 'साझी परंतु अलग-अलग जिम्मेदारियां' का सिद्धांत

प्रश्न 21 (आसान). 'साझी परंतु अलग-अलग जिम्मेदारियां' का सिद्धांत किस सम्मेलन में अपनाया गया था?
उत्तर – पृथ्वी सम्मेलन (1992)

प्रश्न 22 (आसान). इस सिद्धांत के अनुसार, किन देशों पर पर्यावरण संरक्षण की ज़्यादा जिम्मेदारी है?
उत्तर – विकसित देशों पर

प्रश्न 23 (मध्यम). क्योटो प्रोटोकॉल से विकासशील देशों को छूट क्यों दी गई थी?
उत्तर – क्योंकि औद्योगीकरण के दौर में ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में उनका योगदान कम था और उनकी प्राथमिकता आर्थिक व सामाजिक विकास है।

प्रश्न 24 (कठिन). क्या 'साझी परंतु अलग-अलग जिम्मेदारियां' का सिद्धांत विकसित और विकासशील देशों के बीच पर्यावरण सहयोग को बढ़ावा देता है या बाधा डालता है? अपने विचार समझाएं।
उत्तर – यह सिद्धांत सहयोग को बढ़ावा देता है क्योंकि यह ऐतिहासिक अन्याय को स्वीकार करता है और जिम्मेदारी को न्यायसंगत तरीके से बांटता है। यह विकासशील देशों को विकास के लिए जगह देता है, जबकि विकसित देशों को उनकी ऐतिहासिक जवाबदेही के लिए प्रेरित करता है।

» क्योटो प्रोटोकॉल और भारत का पक्ष

प्रश्न 25 (आसान). क्योटो प्रोटोकॉल पर किस वर्ष और कहाँ सहमति बनी?
उत्तर – 1997 में जापान के क्योटो में।

प्रश्न 26 (आसान). क्योटो प्रोटोकॉल का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – औद्योगिक देशों द्वारा ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना।

प्रश्न 27 (मध्यम). क्योटो प्रोटोकॉल की बाध्यताओं से किन देशों को छूट मिली और क्यों?
उत्तर – भारत, चीन और अन्य विकासशील देशों को छूट मिली, क्योंकि औद्योगीकरण के दौर में ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में इनका योगदान कम था।

प्रश्न 28 (कठिन). पर्यावरण के मसले पर 'साझी परंतु अलग-अलग जिम्मेदारियों' के सिद्धांत के अनुरूप भारत का पक्ष क्या है?
उत्तर – भारत का विचार है कि उत्सर्जन-दर में कमी करने की सबसे ज़्यादा ज़िम्मेदारी विकसित देशों की है क्योंकि उन्होंने एक लंबी अवधि तक बहुत ज़्यादा उत्सर्जन किया है, जबकि विकासशील देशों की प्राथमिकता आर्थिक व सामाजिक विकास है।

» पर्यावरण आंदोलन: विविधता और स्थानीय/अंतर्राष्ट्रीय भूमिका

प्रश्न 29 (आसान). चिपको आंदोलन किस तरह का पर्यावरण आंदोलन था - स्थानीय या अंतर्राष्ट्रीय?
उत्तर – स्थानीय

प्रश्न 30 (आसान). क्या पर्यावरण आंदोलन सिर्फ सरकारें चलाती हैं?
उत्तर – नहीं, नागरिक और सामाजिक संगठन भी चलाते हैं।

प्रश्न 31 (मध्यम). उत्तरी और दक्षिणी देशों के वन-आंदोलनों में एक मुख्य अंतर बताइए।
उत्तर – उत्तरी देश वनों को निर्जन मानते हैं, जबकि दक्षिणी देश वनों को मानव निवास स्थान का हिस्सा मानते हैं।

प्रश्न 32 (कठिन). अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण आंदोलनों के दो प्रमुख उद्देश्य क्या हो सकते हैं?
उत्तर – वैश्विक प्रदूषण कम करना (जैसे कार्बन उत्सर्जन) और जैव-विविधता का संरक्षण करना।

» संसाधनों की भू-राजनीति: तेल और पानी

प्रश्न 33 (आसान). तेल और पानी को 'संसाधनों की भू-राजनीति' में महत्वपूर्ण क्यों माना जाता है?
उत्तर – क्योंकि ये दोनों संसाधन देशों की अर्थव्यवस्था और सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक हैं और इनकी उपलब्धता या नियंत्रण पर अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभावित होते हैं।

प्रश्न 34 (आसान). शीत युद्ध के दौरान पश्चिमी देशों को किस संसाधन की चिंता थी?
उत्तर – शीत युद्ध के दौरान पश्चिमी देशों को मध्य-पूर्व से तेल की आपूर्ति की चिंता थी।

प्रश्न 35 (मध्यम). आप 'जलयुद्ध' शब्द से क्या समझते हैं? भविष्य में इसकी संभावना क्यों बढ़ रही है?
उत्तर – 'जलयुद्ध' का अर्थ है पानी पर नियंत्रण या उसके बंटवारे को लेकर देशों या क्षेत्रों के बीच होने वाला संघर्ष। जनसंख्या वृद्धि, जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण के कारण स्वच्छ पानी की कमी बढ़ रही है, जिससे भविष्य में जलयुद्ध की संभावना बढ़ जाती है।

प्रश्न 36 (कठिन). भू-राजनीति में संसाधनों का नियंत्रण कैसे एक देश की शक्ति को बढ़ा या घटा सकता है? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर – संसाधनों का नियंत्रण एक देश को आर्थिक और राजनीतिक शक्ति प्रदान करता है। जैसे, तेल उत्पादक देश तेल की कीमतों और आपूर्ति को नियंत्रित करके वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकते हैं, जिससे उनकी रणनीतिक शक्ति बढ़ जाती है। वहीं, जिन देशों के पास पर्याप्त संसाधन नहीं होते, वे दूसरों पर निर्भर हो जाते हैं, जिससे उनकी bargaining power (सौदेबाजी की शक्ति) घट जाती है।

» मूलवासी (Indigenous People) और उनके अधिकार

प्रश्न 37 (आसान). संयुक्त राष्ट्रसंघ ने मूलवासियों की शुरुआती परिभाषा किस वर्ष दी?

उत्तर – 1982 में

प्रश्न 38 (आसान). भारत में मूलवासियों को आमतौर पर किस नाम से जाना जाता है?

उत्तर – अनुसूचित जनजाति या आदिवासी

प्रश्न 39 (मध्यम). मूलवासी अपनी पहचान बनाए रखने के लिए क्या मांग करते हैं?

उत्तर – अपनी स्वतंत्र पहचान को 'मूलवासी कौम' के रूप में मान्यता देने की मांग करते हैं।

प्रश्न 40 (कठिन). मूलवासियों के लिए भूमि का नुकसान क्यों 'बहुत बड़ा खतरा' है?

उत्तर – क्योंकि भूमि उनके 'आर्थिक-संसाधनों का आधार' है और उनकी 'जीवन-प्रणालियाँ' भूमि पर ही आधारित हैं। भूमि की हानि से उनकी आजीविका और सांस्कृतिक अस्तित्व दोनों खतरे में पड़ जाते हैं।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. भारत और चीन दोनों तेजी से विकास कर रहे हैं। इन दोनों देशों में कार्बन उत्सर्जन (Carbon Emission) बहुत ज़्यादा है। अगर कोई एक देश कार्बन उत्सर्जन कम करने से मना कर दे, तो वैश्विक पर्यावरण पर क्या असर पड़ेगा?

› पहला कदम: समझना होगा कि कार्बन उत्सर्जन वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसें बढ़ाता है, जिससे 'वैश्विक तापवृद्धि (Global Warming)' होती है।

› दूसरा कदम: अगर सिर्फ़ एक देश उत्सर्जन कम करता है और दूसरा नहीं, तो पूरी दुनिया के वायुमंडल में 'प्रदूषण का स्तर' कम नहीं होगा, क्योंकि हवा की कोई सीमा नहीं होती।

› तीसरा कदम: इससे 'जलवायु परिवर्तन' की समस्या बनी रहेगी, जैसे बाढ़, सूखा, और तूफ़ान जैसी प्राकृतिक आपदाएं बढ़ती रहेंगी।

› चौथा कदम: यह 'अंतर्राष्ट्रीय सहयोग' की कमी को भी दिखाता है, जिससे भविष्य में अन्य वैश्विक समस्याओं को हल करना मुश्किल होगा।

उत्तर – एक देश के मना करने से वैश्विक तापवृद्धि और जलवायु परिवर्तन की समस्या बनी रहेगी, क्योंकि वायुमंडल का प्रदूषण किसी एक देश की सीमा में नहीं रुकता, और इससे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग भी कमजोर होगा।

उदाहरण 2. मान लीजिए एक शहर में हर साल 100 एकड़ कृषि-योग्य भूमि कम हो जाती है क्योंकि वहां मकान और कारखाने बन रहे हैं। अगर शहर की आबादी हर साल 5% बढ़ती है, तो आने वाले 10 सालों में 'खाद्य सुरक्षा' (food security) पर इसका क्या असर पड़ेगा?

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि कृषि-योग्य भूमि कम होने से खाद्य उत्पादन कम होगा।

› दूसरा कदम: आबादी बढ़ने से खाने की मांग बढ़ेगी।

› तीसरा कदम: जब उत्पादन कम होगा और मांग बढ़ेगी, तो 'food security' यानी खाद्य सुरक्षा खतरे में पड़ जाएगी। लोगों को पर्याप्त खाना नहीं मिल पाएगा।

› चौथा कदम: इससे भूखमरी, कुपोषण और खाने की चीज़ों के दाम बढ़ेंगे, जिससे गरीबों को सबसे ज्यादा दिक्कत होगी।

उत्तर – आने वाले 10 सालों में, कृषि-योग्य भूमि की कमी और बढ़ती आबादी के कारण शहर की खाद्य सुरक्षा गंभीर रूप से प्रभावित होगी, जिससे बड़े पैमाने पर खाद्य संकट और सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ बढ़ सकती हैं।

उदाहरण 3. भारत और चीन के बीच हिमालय के ग्लेशियरों के पिघलने से जुड़ी जल संसाधनों की कमी के मुद्दे का राजनीतिकरण कैसे होता है?

› पहला कदम: 'दोनों देशों की आर्थिक ज़रूरतों को देखना' – भारत और चीन दोनों की बड़ी आबादी और कृषि को पानी की ज़रूरत है।

› दूसरा कदम: 'कौन कितना पानी इस्तेमाल कर रहा है' और 'कौन कितना प्रदूषण कर रहा है' – इस पर दोनों देशों के अपने-अपने दावे और चिंताएँ होती हैं।

› तीसरा कदम: 'अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर बहस' – जब ये दोनों देश संयुक्त राष्ट्र या अन्य 'वैश्विक सम्मेलनों' में इस मुद्दे पर अपनी बात रखते हैं, तो यह सीधे-सीधे 'राजनीतिक मुद्दा' बन जाता है।

› चौथा कदम: 'शक्ति संतुलन' – जिस देश के पास ज़्यादा 'आर्थिक और सैन्य ताकत' होती है, उसका पक्ष अक्सर भारी पड़ता है, और 'निर्णय लेने में उसकी भूमिका ज़्यादा होती है'।

› पाँचवां कदम: 'सहयोग और समझौते' – अंत में, 'राजनीतिक बातचीत' और 'कूटनीति' के ज़रिए ही कोई समझौता हो पाता है कि 'कैसे संसाधनों का प्रबंधन' किया जाए और 'जिम्मेदारी' कौन उठाएगा।

उत्तर – इस प्रकार, पानी की कमी का एक 'प्राकृतिक मुद्दा' भी 'अंतर्राष्ट्रीय राजनीति' का हिस्सा बन जाता है, क्योंकि इसमें 'विभिन्न देशों के हित', 'शक्ति संतुलन' और 'सहयोग' की ज़रूरत शामिल होती है।

उदाहरण 4. पृथ्वी सम्मेलन कहाँ आयोजित किया गया था और इसमें कितने देशों ने भाग लिया था?

› सबसे पहले, यह याद करें कि 'पृथ्वी सम्मेलन' को 'Earth Summit' भी कहते हैं।

› अब, याद करें कि यह सम्मेलन ब्राजील के किस शहर में हुआ था। यह शहर 'रियो डी जनेरियो' था।

› आखिर में, याद करें कि इस बड़े आयोजन में कितने देश शामिल हुए थे। '170 countries participated' - मतलब 170 देशों ने भाग लिया था।

उत्तर – पृथ्वी सम्मेलन ब्राजील के 'रियो डी जनेरियो' शहर में आयोजित किया गया था और इसमें '170' देशों ने भाग लिया था।

उदाहरण 5. अगर आपसे पूछा जाए कि 'वैश्विक संपदा' के किन्हीं दो उदाहरणों को लिखिए और समझाइए कि इनकी सुरक्षा क्यों महत्वपूर्ण है?

› पहला उदाहरण हम लेते हैं 'पृथ्वी का वायुमंडल' (Earth's atmosphere)। यह वो हवा की परत है जो हमारी धरती को घेरे हुए है और हम सबको साँस लेने के लिए ऑक्सीजन देती है। साथ ही, यह सूरज की हानिकारक किरणों से भी बचाती है।

› दूसरा उदाहरण है 'अंटार्कटिका' (Antarctica)। यह पृथ्वी का सबसे दक्षिणी महाद्वीप है, जो बर्फ से ढका है और 'विश्व के निर्जन क्षेत्र का 26 प्रतिशत हिस्सा' है। इसमें 90% स्थलीय हिम (terrestrial ice) और 70% स्वच्छ जल (fresh water) है। यह 'विश्व की जलवायु को संतुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है'।

› सुरक्षा क्यों महत्वपूर्ण है? क्योंकि 'वैश्विक संपदा' पर किसी एक देश का अधिकार नहीं है, बल्कि पूरी मानवता का है। अगर कोई एक देश या कुछ देश इन्हें नुकसान पहुँचाते हैं, तो उसका असर पूरी दुनिया पर पड़ेगा। जैसे, वायुमंडल प्रदूषित होगा तो सबको साँस लेने में दिक्कत होगी, और अंटार्कटिका की बर्फ पिघलेगी तो समुद्र का स्तर बढ़ेगा, जिससे 'धरती के जीवन के लिए यह बात बड़ी प्रलयंकारी साबित होगी'। इसलिए, इनकी सुरक्षा के लिए सभी देशों को मिलकर 'अंतर्राष्ट्रीय सहयोग' करना पड़ता है, भले ही ये 'टेढ़ी खीर' हो।

उत्तर – वैश्विक संपदा के दो उदाहरण हैं पृथ्वी का वायुमंडल और अंटार्कटिका। इनकी सुरक्षा इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि ये किसी एक देश की संपत्ति नहीं हैं, बल्कि पूरी मानव जाति की साझा विरासत हैं। इनकी बिगड़ती स्थिति का असर पूरी दुनिया पर पड़ता है, जिससे सभी के जीवन और भविष्य पर खतरा आता है।

उदाहरण 6. क्योटो प्रोटोकॉल के तहत किन देशों को ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी करने की बाध्यताओं से छूट दी गई थी, और क्यों?

› क्योटो प्रोटोकॉल एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता है जो ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के लक्ष्य निर्धारित करता है।

› इस प्रोटोकॉल के अंतर्गत, 'भारत, चीन और अन्य विकासशील देशों को क्योटो प्रोटोकॉल की बाध्यताओं से छूट दी गई है।'

› छूट का कारण यह है कि 'औद्योगीकरण के दौर में ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के मामले में इनका कुछ ख़ास योगदान नहीं था।'

› इस सिद्धांत के अनुसार, 'ऐतिहासिक रूप से भी और मौजूदा समय में भी ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में सबसे ज्यादा हिस्सा विकसित देशों का है।' और 'विकासशील देशों का प्रतिव्यक्ति उत्सर्जन अपेक्षाकृत कम है।'

› इसलिए, उन्हें यह छूट दी गई ताकि वे आर्थिक और सामाजिक विकास पर ध्यान दे सकें।

उत्तर – क्योटो प्रोटोकॉल के तहत भारत, चीन और अन्य विकासशील देशों को ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी करने की बाध्यताओं से छूट दी गई थी, क्योंकि ऐतिहासिक रूप से ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में उनका योगदान कम रहा है, और उनकी प्राथमिकता आर्थिक एवं सामाजिक विकास है।

उदाहरण 7. क्योटो प्रोटोकॉल क्या है और भारत ने इसका समर्थन क्यों किया, जबकि उसे कुछ छूट भी मिली?

› पहले समझेंगे 'क्योटो प्रोटोकॉल' क्या है: यह 1997 में जापान के क्योटो में हुआ एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता है। इसका मुख्य लक्ष्य 'ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना' था, ताकि ग्लोबल वार्मिंग रोकी जा सके।

› अब देखेंगे 'किनके लिए' था: यह मुख्य रूप से 'औद्योगिक देशों' के लिए था, यानी उन अमीर देशों के लिए जिन्होंने अतीत में बहुत प्रदूषण फैलाया है।

› भारत की स्थिति: 'भारत, चीन और अन्य विकासशील देशों को इसकी बाध्यताओं से छूट दी गई' थी। इसका कारण यह था कि औद्योगीकरण के शुरुआती दौर में इन देशों का ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में ज़्यादा योगदान नहीं था।

› भारत का तर्क: भारत का मानना है कि 'उत्सर्जन-दर में कमी करने की सबसे ज्यादा जिम्मेदारी विकसित देशों की है' क्योंकि उन्होंने लंबे समय तक अत्यधिक उत्सर्जन किया है। भारत की 'पहली प्राथमिकता आर्थिक और सामाजिक विकास' है।

उत्तर – क्योटो प्रोटोकॉल एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता है जिसका उद्देश्य औद्योगिक देशों द्वारा ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन कम करना है। भारत ने इसका समर्थन किया और 2002 में इस पर हस्ताक्षर किए, क्योंकि यह जलवायु परिवर्तन से निपटने का एक वैश्विक प्रयास था। भारत को इसकी कुछ बाध्यताओं से छूट मिली, क्योंकि उसका ऐतिहासिक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में योगदान कम था और उसकी प्राथमिकता अपने आर्थिक व सामाजिक विकास को सुनिश्चित करना है।

उदाहरण 8. उत्तरी और दक्षिणी गोलार्ध के देशों में पर्यावरण आंदोलनों के बीच क्या मुख्य अंतर हैं?

› पहला अंतर है वनों को देखने का नज़रिया। उत्तरी देशों में, 'forests are seen as wilderness areas' – यानी जंगल ऐसी जगहें हैं जहाँ इंसान नहीं रहते। वे जंगलों को इंसानों से बचाकर एक 'निर्जन प्रांत' मानते हैं।

› इसके ठीक उलट, 'in Southern countries, most environmental issues are based on the recognition that people also live in forests' – दक्षिणी देशों में लोग मानते हैं कि जंगल सिर्फ़ पेड़-पौधों के लिए नहीं, बल्कि इंसानों के रहने की जगह भी हैं।

› दूसरा अंतर है उद्देश्यों का। उत्तरी देशों के आंदोलन अक्सर 'किसी खास प्रजाति को बचाने' या 'निर्जन वन-पर्यावासों को संरक्षण' देने पर केंद्रित होते हैं, जैसे 'saving endangered species' या 'preserving pristine wilderness'.

› जबकि दक्षिणी देशों के आंदोलनों में 'मानवीय समुदायों' और 'उनके जीवनयापन' के मुद्दे भी शामिल होते हैं, क्योंकि जंगल उनके जीवन का हिस्सा होते हैं। जैसे भारत में 'नर्मदा बचाओ आंदोलन' सिर्फ़ नदी बचाने के लिए नहीं था, बल्कि उन लाखों लोगों के विस्थापन के खिलाफ भी था जो उस नदी के किनारे रहते थे।

› संक्षेप में कहें तो, 'उत्तरी' देश पर्यावरण को 'बचाने' की बात करते हैं, और 'दक्षिणी' देश पर्यावरण को 'साथ लेकर जीने' की बात करते हैं।

उत्तर – उत्तरी देशों में जंगल को निर्जन और मनुष्य से अलग माना जाता है, जहाँ आंदोलन मुख्य रूप से वन्यजीवों और जंगल को बचाने पर केंद्रित होते हैं। दक्षिणी देशों में जंगल को मनुष्यों के जीवन का हिस्सा माना जाता है, जहाँ आंदोलन पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ स्थानीय समुदायों के अधिकारों और आजीविका की रक्षा पर भी जोर देते हैं।

उदाहरण 9. मध्य-पूर्व के देशों में तेल के विशाल भंडार होने के कारण उन पर वैश्विक शक्तियों का ध्यान क्यों रहता है?

› तेल आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं का 'जीवनरक्त' है, जो परिवहन, उद्योग और ऊर्जा के लिए आवश्यक है।

› दुनिया के अधिकांश विकसित देशों की अर्थव्यवस्था तेल पर अत्यधिक निर्भर है।

› मध्य-पूर्व में तेल की आपूर्ति पर नियंत्रण से वैश्विक अर्थव्यवस्था और राजनीति पर बड़ा प्रभाव डाला जा सकता है।

› इसलिए, वैश्विक शक्तियाँ अपनी आर्थिक सुरक्षा और रणनीतिक हितों को सुनिश्चित करने के लिए इस क्षेत्र में स्थिरता और तेल की निर्बाध आपूर्ति पर ध्यान केंद्रित करती हैं।

उत्तर – मध्य-पूर्व में तेल के भंडार उन्हें रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण बनाते हैं, जिस पर वैश्विक अर्थव्यवस्था की निर्भरता के कारण दुनिया की प्रमुख शक्तियाँ नियंत्रण और पहुँच बनाए रखने का प्रयास करती हैं।

उदाहरण 10. मूलवासी कौन होते हैं और उनके मुख्य अधिकार क्या हैं?

› सबसे पहले हमें 'मूलवासियों की परिभाषा' समझनी होगी। संयुक्त राष्ट्रसंघ ने 1982 में कहा कि 'इन्हें ऐसे लोगों का वंशज बताया गया जो किसी मौजूदा देश में बहुत दिनों से रहते चले आ रहे थे।' मतलब, ये वो लोग हैं जो सदियों से किसी खास जगह पर रह रहे हैं, और बाद में कोई दूसरी संस्कृति या जातीय मूल के लोग बाहर से आए और इन पर राज करने लगे।

› फिर हमें इनके जीवन जीने का तरीका समझना है। 'किसी देश वेफ 'मूलवासी' आज भी उस देश की संस्थाओं वेफ अनुरूप आचरण करने से श्यादा अपनी परंपरा, सांस्कृतिक रिवाश तथा अपने ख़ास सामाजिक, आर्थिक ढर्रे पर जीवन-यापन करना पसंद करते हैं।' यानी, वे आधुनिक कानूनों से ज़्यादा अपनी पुरानी परंपराओं और तरीकों से जीते हैं।

› अब इनके अधिकारों की बात। किताब कहती है कि 'सरकारों से इनकी माँग है कि इन्हें मूलवासी कौम वेफ :i esa viuh LoraRk igpku jakhus oala leuday mama ja' मतलब, उन्हें अपनी 'स्वतंत्र पहचान' बनाए रखने का अधकिार मिले।

› और सबसे ज़रूरी अधिकार – 'अपने मूल वासस्थान पर हक की दावेदारी में विश्वभर वेफ मूलनिवासी यह जुमला इस्तेमाल करते हैं कि हम यहाँ 'अनंत काल से रहते चले आ रहे हैं'।' यानी, जिस ज़मीन पर वे 'अनंत काल से' रह रहे हैं, उस पर उनका अधिकार है। इस 'भूमि की हानि का अर्थ है, आर्थिक-संसाध्नों वेफ एक आधर की हानि और यह मूलवासियों वेफ जीवन वेफ लिए बहुत बड़ा ख़तरा है।'

› तो मूलवासी वो लोग हैं जो सदियों से किसी जगह पर रहते आ रहे हैं, अपनी खास संस्कृति और परंपराओं से जीते हैं। उनके मुख्य अधिकार हैं अपनी 'पहचान' बनाए रखना और अपनी 'ज़मीन' तथा उस पर आधारित 'जीवन-प्रणालियों' पर उनका हक होना।

उत्तर – मूलवासी वे लोग हैं जो सदियों से किसी विशेष क्षेत्र के मूल निवासी रहे हैं और अपनी विशिष्ट संस्कृति, परंपराओं और जीवन-प्रणालियों का पालन करते हैं, जो अक्सर मुख्यधारा समाज से भिन्न होती हैं। उनके मुख्य अधिकार अपनी 'स्वतंत्र पहचान' बनाए रखने, अपनी 'मूल वासभूमि' और उस पर आधारित 'जीवन-प्रणालियों' पर 'हक' जताने और 'परंपरागत संसाधनों' तक पहुँच बनाए रखने के हैं।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• इस टॉपिक से 'केस स्टडी' या 'कारण-परिणाम' पर आधारित प्रश्न अक्सर आते हैं। हर चिंता का कारण और उसका प्रभाव ध्यान से समझें।

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत ज़रूरी है। 'पृथ्वी सम्मेलन', 'एजेंडा-21' और 'टिकाऊ विकास' की परिभाषा और महत्व पर सीधे सवाल आते हैं, इन्हें अच्छे से समझना!

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'वैश्विक संपदा' की परिभाषा, उसके उदाहरण और उनकी सुरक्षा से जुड़ी चुनौतियों पर अक्सर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं।

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है! 'क्योटो प्रोटोकॉल' के उद्देश्य, 'विकासशील देशों को छूट' क्यों मिली, और 'भारत के पक्ष' के तर्क पर खासकर ध्यान देना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में 'केस स्टडी' या 'तुलनात्मक प्रश्न' के रूप में आ सकता है, खासकर उत्तरी और दक्षिणी देशों के आंदोलनों के अंतर पर ध्यान दें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में 'दीर्घ उत्तरीय प्रश्न' के रूप में आ सकता है, जहाँ आपको 'मूलवासियों की परिभाषा', 'उनके अधिकार' और 'उनके संघर्ष' तीनों को अच्छे से समझाना होगा।

एक नज़र में रिवीज़न

› कृषि भूमि, जल, वन, ओजोन, समुद्र प्रदूषण वैश्विक पर्यावरणीय चिंताएं हैं।
› रियो-1992, पृथ्वी सम्मेलन: एजेंडा-21 और टिकाऊ विकास, जलवायु, जैव-विविधता.
› विश्व की साझी संपदा: किसी देश का अधिकार नहीं, वैश्विक सहयोग से सुरक्षा।
› क्योटो प्रोटोकॉल: औद्योगिक देश ग्रीनहाउस गैस कम करें; भारत को ऐतिहासिक कम योगदान के कारण छूट।
› पर्यावरण आंदोलन: विविध, स्थानीय/अंतर्राष्ट्रीय, उत्तरी/दक्षिणी अंतर।
› मूलवासी: सदियों से बसे, अपनी संस्कृति, ज़मीन-हक, पहचान, भारत में आदिवासी।